दिसंबर माह मे किसानों के लिए सलाह

- पशुओं को अत्यधिक सर्दी से बचाने के उपाय करना चाहिए तथा रात मे पशुओं को कभी भी खुले मे नहीं बांधना चाहिए।
- धूप निकलने की स्थिति मे पशुओं को खुले मे बांधना चाहिए।
- अधिक जाड़ा होने पर पशु के शरीर को गर्म रखने के लिए, शरीर पर कपड़ा या जूट की बोरी बांध दें।
- खुरपका-मुहपका रोग, गलाघोंटू, लंगड़ी रोगों के टीके यदि अभी तक नहीं लगवाएँ हो तो कृपया समय रहते अवश्य लगवा लें।
- उचित कृमिनाशक दवाओं का उपयोग हर तीन महीने पर अवश्य करना चाहिए।
- दुधारू पशुओं को थनैला रोग से बचाने के लिए पूरा दूध निकालें और दूध दुहने के बाद थनों को कीटाणु नाशक घोल से धो लेना चाहिए।
- पशुओं को खनिज मिश्रण निर्धारित मात्रा मे दाने या चारे के साथ मिलाकर दें।
- सर्दियों मे दलहनी किस्म का हरा चारा प्रचुर मात्रा मे उपलब्ध रहता है। इसलिए इसे पशुओं को प्रयाप्त मात्रा मे देना चाहिए।

नवम्बर माह मे किसानों के लिए सलाह

- इस माह मे पशुओं को सर्दी से बचाने के उपाय करना चाहिए एवं रात मे पशुओं को खुले मे नहीं बांधना चाहिए।
- पशुशाला को इस मौसम मे साफ-सुथरा एवं सूखा रखना चाहिए।
- पशुओं की रोग निरोधक क्षमता बनी रहे इसके लिए प्रतिदिन निर्धारित मात्रा मे खनिज-मिश्रण दाने के साथ मिलाकर देना चाहिए।
- यदि पशुओं को अबतक खुरपका-मुहपका का टीकाकरण नहीं कराया गया है तो इस माह तक अवश्य करवा लें।
- अन्त:परजीवी से बचाने हेतु कृमिनाशक दवा की उचित खुराक पशुचिकित्सक के सलाह पर दें।
- जब चारे का अभाव हो उस समय के लिए चारे का संग्रहण (हे तथा साइलेज के रूप में) कर लेना चाहिए।

<u>अक्टूबर माह मे किसानों के लिए सलाह</u>

- इस माह से सर्दी का असर शुरू हो जाता है अत: ठंड से बचने के लिए उचित प्रबंध कर लिया जाना चाहिए।
- इस माह मे जई/बरसीम की उत्तम किस्में बो देनी चाहिए।
- एफ.एम.डी. का टीकाकरण अवश्य करवा लें।
- रूटीन डिबर्मिंग पर ध्यान देना चाहिए।
- पशुओं को अफरा से बचाने के लिए संतुलित हरा चारा एवं दाना देना चाहिए।

सितंबर माह मे किसानों के लिए सलाह

- पशुओं को वर्षा के पानी से बचायें।
- पशुओं को यथासंभव सूखे व ऊँचे स्थान पर रखें।
- वातावरण के तापमान में उतार-चढ़ाव के दुष्प्रभावों से पशुओं को बचाने के उपाय करें।
- पशुओं को दिन के समय धूप से बचाने तथा पीने के पानी को समुचित व्यवस्था करें और रात के समय ठंड से बचने के उपाय करें।
- वर्षा होने पर पशुशाला मे जल भराव हो जाता है। अत: जल निकासी का समुचित प्रबंध करें।
- बाड़ें की साफ-सफाई का विशेष ध्यान रखें।
- रक्त परजीवी वर्षा काल में जन्म लेते है तथा मच्छर, कीट व चीचड़ इत्यादि के द्वारा फैलते है इससे विभिन्न रोग होते है। अत: बाड़ें के आस-पास गंदा पानी एवं गंदगी एकत्रित न होने दें।
- परजीवी नाशक दवा अवश्य पिलायें।
- गर्मी व नमी जनित रोगों से बचाने के लिए समय रहते इसके टीकें पशुओं में अवश्य लगवायें।
- इस महीने में हरे चारे की उपलब्धता अधिक होती है इसलिए हरे चारे के साथ-साथ दाना व खनिज लवण मिश्रण अवश्य दें।
- हरे चारे के संग्रहण पर विशेष ध्यान दें।
- हरे चारे से साइलेज व हे इत्यादि बनायें।
- बरसीम, लूसर्न की बुआई की तैयारी करें।

<u>जुलाई माह मे किसानों के लिए सलाह</u>

- हारा चारा की बुआई करना सुनिश्चित करें।
- वर्षा से बचाव के लिए समुचित व्यवस्था करें।
- पशुओं को बीमारियों से बचाव हेतु टीकाकरण कराये।
- दुधारू पशुओं के लिए हरे चारे के साथ-साथ सूखा चारा व रातब आदि की समुचित व्यवस्था रखें।
- नवजात बच्चों को खीस अवश्य पिलायें व नाभि रोग से बचाव करें।
- बाँझ पशुओं को समुचित चिकित्सा व गर्भित कराएँ।
- पशुपालन के प्रतिदिन की प्रक्रियाएँ मौसम विज्ञान की भविष्यवाणी को ध्यान मे रखते हुए अपनाएं।

जून माह मे किसानों के लिए सलाह

- खरीफ मे हारा चारा की बुआई प्रारम्भ करें। ज्वार व मक्का आदि के उन्नत क़िस्मों के बीज का प्रयोग करें।
- गर्मियों के मौसम मे पैदा की गई ज्वार मे जहरीला पदार्थ हो सकता है, जो पशुओं के लिए हानिकारक है। अत: चारों की सिंचाई या चारों को धोकर खिलाएँ।
- पशुओं को गर्मी से बचाने के लिए उचित उपाय करें तथा अधिक से अधिक स्वच्छ पानी पिलायें व नहलायें।
- एच.एस. एवं बी.क्यू. टीका के 10-15 दिन पहले सभी पशु को कीड़ों की दवाइयाँ देना चाहिए ताकि टीका प्रभावी हो।
- पशुओं को 50 ग्राम खनिज मिश्रण एवं 20 ग्राम नमक प्रतिदिन देना चाहिए।
- अधिक दूध देने वाली पशुओं को तरल कैल्शियम फास्फोरस 70-100 ग्राम प्रतिदिन पिलायें।
- नवजात बच्चों को वाह्य व आंतरिक परजीवियों जैसे जूं, चिचड़ी, किलनी इत्यादि से बचाव करें।

मई माह मे किसानों के लिए सलाह

- पशुओं को धूप व लू से बचाने का उपाय करें।
- गर्मी में पशुओं को छायेदार स्थान पर रखें एवं पीने के लिए स्वच्छ-ताजा पानी का प्रबंध अवश्य करें।
- पशुओं के आहार में मौसम के अनुसार आवश्यक बदलाव करें।
- पशुओं के आहार में गेहूँ का चौकर और जौं की मात्रा बढ़ाएं।
- दुग्ध उत्पादन क्षमता बनी रहे इसके लिए उसे संतुलित आहार दें।
- चिचड़ियों एवं पेट की कृमि से बचाव का उचित प्रबंध करें।
- खरीफ में हरा चारा लेने के लिए ज्वार और मक्का की बुआई करें।
- गलघोंटू एवं लंगड़ा बुखार बीमारी से बचाव के टीके अवश्य लगवाएँ।
- दुधारू पशुओं को दो-तीन बार अवश्य नहलाएं।

मार्च माह में किसानों के लिए सलाह

- बदलते मौसम में पशुओं की स्वास्थ्य का ध्यान रखें।
- वाहय परजीवियों (जूँ, चिचड़ी एवं किलनी इत्यादि) से बचाव के उपाय अपनाएं।
- खुरपका व मुहपका के टीकाकारण करवाएँ।
- पशुओं व बछड़ें-बछड़ियों को ठंडी व तेज हवाओं से बचाव करें।
- गर्भधारण किए हुए पशुओं को 1-1.5 किग्रा. दना अलग से खिलायें।
- ग्रीष्मकाल मे हरे चारे हेतु मक्का, बाजरा एवं ज्वार की बुवाई करें।
- ब्याने वाले पशुओं की प्रसूति बुखार से बचाने के लिए खनिज मिश्रण अवश्य खिलायें।

फरवरी माह में किसानों के लिए सलाह

- पशुओं को सर्दी से बचाव का प्रबन्ध करें।
- बाह्य परजीवी तथा अन्त: परजीवी की दवा पिलवाये।
- दूध पूरा व मुट्ठी बांधकर निकालें।
- पशुओं को संतुलित आहार के साथ-साथ 40-50 ग्राम खनिज मिश्रण प्रतिदिन खिलाये।
- दूध उत्पादन को अधिकतम बनाये रखने के लिए:-

  (क) स्वादिष्ट एवं शीघ्र पचने वाले आहार दें।

  (ख) स्वच्छ व ताजा पानी पिलाएँ।
- गर्मी मे आने वाली पशुओं की कृत्रिम गर्भाधान कराएँ।
- पशुओं से संबन्धित आवश्यक जानकारी पशुशाला मे अवश्य रखें।

जनवरी माह में किसानों के लिए सलाह

- पशुओं को सर्दी से बचाएँ।
- छोटे बच्चों को सर्दियों मे दस्त एवं परजीवियों से अवश्य बचाव करें।
- दुधारू पशुओं को उनके दुग्ध के अनुसार संतुलित आहार दें।
- पशुओं को मुँहपका-खुरपका बीमारी से बचाव के लिए टीका लगवायें।
- नवजात बच्चों, कमजोर एवं बीमार पशुओं को साफ ताजा गुनगुना पानी पिलायें।
- पशुओं को स्वस्थ रहने के लिए सफाई पर विशेष ध्यान दें।
- दुधारू पशुओं की समय-समय पर संक्रमण से बचाव के लिए जाँच करायें।
- दुधारू पशुओं को थनैला रोग से बचाने के लिए दूध पूरा व मुट्ठी बाँध कर निकालें और दूध निकालने के 15-20 मिनट तक पशु को बैठने न दें।
- सर्द मौसम मे थन फटने की समस्या को ध्यान मे रखते हुए विशेष उपाय करें।
- रात के समय सभी पशुओं के लिए सूखा बिछावन अवश्य उपलब्ध पिलायें।

किसानों के लिए उचित सलाह

1. पशुओं को सर्दी से बचाने का उचित प्रबंध करें।
2. पशुओं का बिछावन सूखा होना चाहिए एवं प्रतिदिन बदलते रहें।
3. चारे, जई व जौं फसलों की बुवाई करें।
4. दुधारू पशुओं को संतुलित खानपान दें।